राही मासूम रजा के उपन्यासों की यथार्थवादी दृष्टि

पवन कुमार राय[1]

मानव जीवन की समग्र अनुभूतियों का सफलतम् प्रकटीकरण ही साहित्य है । समाज में मंगल की प्राप्ति एवं अमंगल का निषेध ही इसका प्रमुख उद्देश्य है । आज मनुष्य का जीवन अन्यान्य समस्याओं से ग्रस्त है, कुछ समस्यायें उसे नियति या परिस्थितिजन्य कारणों से मिलती हैं तो कुछ समस्याओं का निर्माण वह खुद कर लेता है । मनुष्य के द्वारा स्वनिर्मित समस्याओं में सर्वप्रथम हैं सामाजिक सौहार्द के स्रोत का सूखते जाना । युगीन प्रगति के दौर में छीजती हुईं मानवीय संवेदनाएं मनुष्य के आदमीयत पर ही प्रश्नचिन्ह खड़ी करने लगी हैं । सामाजिक समरसता के क्रमशः क्षरण से ही समाज का सर्वाधिक नुकसान हो रहा है। भारत के ग्रामीण समाज में विच्छेदन का धुन इसे अन्दर ही अन्दर खोखला बना रहा है तथा विद्वेष की विष–बेली तेजी से अपना प्रसार कर रही है । प्रख्यात उपन्यासकार राही मासूम रजा ने सामाजिक जीवन में लग रहे इन घुनों का ना केवल बारिकी से अन्वेषण किया है, अपितु बहुत हद तक उनके दर्द को सहा तथा झेला भी है । उनके उपन्यासों में मानवीय समाज का यह दर्द अपने सम्पूर्ण एहसास के साथ मौजूद है ।

डा0 राही मासूम रजा ने मानवीय समाज की विभिन्न विसंगतियों को ग्रामीण जीवन के संरचनात्मक ढांचे के अन्दर उसकी सम्पूर्ण सच्चाई एवं अविछिन्नता के साथ अपने उपन्यासों में चित्रित करते हुए तदजन्य विद्रूपता को पूरी ईमानदारी से सफल अभिव्यक्ति प्रदान की है । मानवीय समाज का समग्र रुप व्यक्ति के व्यक्तिगत, सामाजिक, राजनैतिक अवधारणाओं, संबंधी जीवन शैली, आचार विचार आदि विभिन्न संघटक तत्वों के प्रकट व अप्रकट उभय रुपों पर अपनी पैनी दृष्टि रखते हुए मानव जीवन की अन्यान्य समस्याओं को अपनी विहंगम दृष्टि से अवलोकित करता है तथा अपनी समझ व विचार के अनुसार वृहद सामाजिक फलक पर इनका समाधान भी अपने कथ्य के माध्यम से उपस्थित करता है। डा.मासूम रजा का सम्पूर्ण कथा साहित्य जीवन जगत की गहरी संवेदना से जुड़कर सामाजिक, राजनैतिक समस्याओं को अत्यन्त सूक्ष्मता से रेखांकित करता हुआ व्यक्ति व समाज की घुटन, टूटन एवं आन्तरिक छटपटाहट को सफलतम अभिव्यक्ति प्रदान करता है। यह व्यक्ति के बनते बिगड़ते व्यक्तित्व, मन की टकराहट एवं उसके अन्दर के बौनेपन को पूरी सच्चाई व साहस के साथ सामने लाता है ।

डा. रजा की औपन्यासिक कृतियां युगीन समस्याओं जैसे सम्प्रदायिकता, जातीय उत्पीड़न, स्त्री शोषण, लैंगिक भेदभाव, रुढ़िवादिता, दमन शोषण इत्यादि को बहुत ही गम्भीरता से उठाती है। इसके अतिरिक्त राही की पैनी दृष्टि स्वातंत्रयोत्तर भारत की राजनैतिक स्थिति का सूक्ष्म पर्यवेक्षण करते

[1] शोध छात्र, जय प्रकाश विश्वविद्यालय छपरा

हुए आजाद भारत की राजनैतिक विद्रुपता एवं नंगई को भी बाखूबी उजागर करती है। साम्प्रदायिकता आजाद भारत की सर्व प्रमुख राजनैतिक समस्या है, जिसकी तपिश में आज भी देश का हर कोना किसी न किसी रुप में झुलस रहा है। यह भयानक समस्या मूल रुप से राजनीति की ही देन मानी जाती है, जो हमारे समाज के सामाजिक ताने बाने को लगातार झिन्न भिन्न कर रही है। राजनीतिक स्वार्थ ने सामयिक समस्याओं को राष्ट्रीयता के भाव से अलग करके इसे निजी हित साधन के भाव से जोड़ दिया है परिणामतः आज की राजनीति अपने राजनैतिक लाभ के चश्मे से ही हर समस्या को देखती है और तद्नुरुप ही उसका समाधान सुझाती या करने का प्रयास करती है। इस कारण देश में साम्प्रदायिकता एवं जातिवाद का रोग उतना ही बढ़ता जा रहा है जितना कि उसके निदान की तथाकथित कोशिश हो रही है। उपन्यासकार डा. राही मासूम रजा ने स्वातंत्रयोत्तर भारत में पल पल रंग बदलती राजनीति के हर रंग को अपने तरीके से उकेरा है तथा साम्प्रदायिकता व जातिवाद की दमघोटू मकड़जाल में उलझकर तड़पते हुए भारतीय जनमानस की पीड़ा को बाखूबी अभिव्यक्ति प्रदान की है। अपने उपन्यासों में वर्णित इन नंगी सच्चाईयों से डा. रजा का अभिष्ट है जनता को राजनीति के असली चेहरे से परिचित कराना तथा जनमानस को सामाजिक जीवन में लग रहे इन धुनों की वास्तविक पहचान कराना जो स्वयं आम जन के आस्तित्व के लिए गंभीर चुनौती बनते जा रहे हैं ।

भारत गांवो का देश है तथा हमारे देश की आत्मा गांवो में बसती है। 'भारत माता ग्रामवासिनी'। हमारे देश की बहुसंख्य आबादी गांवो में निवास करती है। गांवों की सभ्यता, संस्कृति, आचार, विचार, व्यवहार, संस्कार ही देश की समस्त सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन की पृष्ठभूमि तैयार करती है । आज भारतीय समाज में, विशेषकर ग्रामीण जीवन में सामाजिक विच्छेदन अत्यन्त त्वरा के साथ दिखाई दे रहा है। सामाजिक विच्छेदन की इस प्रक्रिया का सूक्ष्मतापूर्वक पर्यवेक्षण करते हुए इसके मूल कारणों की पहचान करना और जीवन के व्यापक सन्दर्भों में इसकी परख करते हुए तद्जन्य समाधान का औचित्य तो स्वतः सिद्ध है। ग्रामीण जीवन में रहते हुए उसके विविध स्तरों की पड़ताल तथा राजनैतिक कारणों व परिस्थितियों के कारण ग्रामीण जीवन में हो रहे बदलावों के हर स्पन्दन को डा.राही मासूम रजा ने अपने उपन्यासों में अभिव्यक्ति प्रदान की है। सामाजिक जीवन में राजनीति के बढ़ते हस्तक्षेप ने गांवों के स्वरुप में आमूलचूल परिवर्तन उपस्थित कर दिया है। स्वार्थपरता, कटुता, वैमनस्य एवं दाव, प्रति दाव की राजनैतिक कलाबाजी अब ग्रामीण जीवन का सहज अंग बनती जा रही है ।

डा. राही मासूम रजा की औपन्यासिक कृतियों में अंकित ग्रामीण जीवन के इन हर बदलावों एवं गतिविधियों का सूक्ष्म पर्यवेक्षण जीवन की सापेक्षिक मूल्यपरकता की साथ उपस्थित है । स्वातंत्रयोत्तर भारत में समसामयिक राजनैतिक, सामाजिक बदलावों के संदर्भ में डा. राही मासूम रजा के उपन्यासों में अभिव्यक्त यथार्थ चित्रण का व्यापक तथ्यान्वेषी दृष्टिकोण से औपन्यासिक आयाम में ढलकर सहज ही पाठके मन मस्तिष्क से जुड़ जाता है । आज का

भारतीय समाज निरन्तर नूतन विचारों तथा अवधारणाओं से जुड़ रहा है। सामाजिक संबंधों की अवधारणा में व्यापक परिवर्तन दृष्टिगत हो रहा है, इसी तरह राजनीति की विद्रुपता दिनों दिन बढ़ती जा रही है। स्वंत्रता के बाद अब तक भारतीय राजनीति के स्वरुप में व्यापक परिवर्तन हुआ है। भारतीय समाज व राजनीति के बदलते मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में डा. राही मासूम रजा के कथा साहित्य में चित्रित यथार्थ का स्वरुप अत्यन्त व्यापक एवं प्रभावशाली है ।

डा. राही मासूम राजा प्रगतिशील दृष्टि के साहित्यकार है । देशभक्ति महज उनके लिए एक नारा नही अपितु जीवन का एक अविच्छिन्न अंग है। उनकी रचनाएं उनके सच्चे राष्ट्रभक्त होने की गवाही देती हैं। डा.रजा भारम की मिश्रित संस्कृति के संपोषक एवं हर प्रकार की संकीर्णता के विरोधी हैं। उनकी सभी रचनाओं में राष्ट्र की एकता, अखण्डता तथा मानवता को ध्वस्त करने वाली हर प्रकार की संकीर्णता के प्रतिरोध का स्वर अन्तर्निहित है। डा. रजा के साहित्य का उद्देश्य हिन्दुस्तान की एकता,बन्धुत्व, आपसी सौहार्द तथा राष्ट्र का सम्यक विकास है। उन्होने समय से प्रभावित समाज के यथार्थ रुप को अपने उपन्यासों में रुपायित किया है। वे समय के साथ होने वाले सामाजिक परिवर्तनों पर सूक्ष्म दृष्टि रखते हैं ।

डा.राही मासूम रजा ने हिन्दी और उर्दू दोनों क्षेत्रों में समान अधिकार के साथ लेखन कार्य किया है तथा साहित्य की विविध विधाओं में अपनी अन्यतम प्रतिभा का निवर्धन कराने में समर्थ हुए हैं। राही मूलतः कवि प्रकृति के व्यक्ति थे। वे साहित्य जगत में काव्य की ओर से गद्य की ओर उन्मुख हुए थे और ''**गद्यं कवितां निकषं वन्दन्ति**'' की सूक्ति को चरितार्थ करते हुए हिन्दी जगत को अपने अंन्यतम औपन्यासिक कृतियों का अनमोल तोहफा प्रदान किया। शुरु में उन्होंने उर्दू के शायर के रुप में ख्याति प्राप्त की उसके बाद उन्होंने उर्दू में अलग अलग नाम से उपन्यास भी लिखे किन्तु बाद में किन्तु बाद में उन्होंने जब उर्दू लेखन क्षेत्र की सीमाओं को अनूभूत किया तो उन्होने देवनागरी हिन्दी में अपना लेखन कार्य प्रारम्भ किया। ड.रजा ने जिस युग को अपने आंखों से देखा, जिस परिवेश में उनका पालन पोषण एवं विकास हुआ उस युगा एवं परिवेश का स्वानुभूत चित्रण उन्होंने अपने कथा साहित्य में किया है। जब हम डा.रजा के उपन्यासों का अनुशीलन करते हैं तो ज्ञात होता है कि उनके उपन्यासों की कथावस्तु का परिवेश सन् 1937 से प्रारम्भ होता है और अपनी अपराजेय जीवनी शक्ति के प्रवाह में कार्य की गति का सूक्ष्म निरीक्षण करते हुए तथा मानवीय संवेदना के प्रत्येक तन्तुओं को संश्पर्णित करते हुए सन् 1984 तक पहुँच जाता है ।

वास्तव में उपन्यास गद्यात्मक महाकाव्य होता है जिसमें युगीन जीवन की विविधता अपने समस्त आयामों के साथ अभिव्यक्त होती है। इसके साथ–साथ उपन्यास में विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक समस्याओं का व्यापक चित्रण होता है। साहित्य यदि जीवन की व्याक्ख्या है तो उपन्यास साहित्य की सर्वाधिक सश्सक्त विधा है। डा.राही मासूम रजा ने साहित्य के इस सशक्त विधा के माध्यम से भारतीय जन जीवन के हर स्पन्दन को उसकी अतल गहराइयों में उत्तर अनुभूत किया है तथा उसे प्रभावकारी अभिव्यक्ति प्रदान की है। डा.रजा का लेखन काल एक युग की

समाप्ति और दूसरे युग का आरम्भ है। उन्होंने अपने उपन्यासों के माध्यम से भारतीय जीवन के अछूते पहलुओं के प्रति अपनी तीव्र संवेदना को यथार्थ की गहरी पकड़ के साथ प्रस्तुत किया है। उनकी प्रत्येक रचना में उनका जीवन–दर्शन अलग अलग दृष्टिकोंणों से हमारे सामने उजागर हुआ है। किसी भी साहित्यकार के जीवन को हम उसके सृजन में देख सकते हैं। साहित्यकार के व्यक्तित्व में सृजन शैली, लेखन कला, शब्द–योजना, अर्थ चमत्कार, भाव व्यंजना एवं विचार–दर्शन सभी आ जाते हैं। कृति के माध्यम से साहित्यकार की अनुभूति कला और अध्ययन गाम्भीर्य का पता चलता है। डा. रजा की औपन्यासिक कृतियों भारतीय जन जीवन के प्रति उनकी गहरी संवेदनशीलता एवं सामाजिक सौहार्द के विघटनकारी तत्वों के प्रति उनकी गंभीर चिंता की गवाही देती है ।